RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापितः 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 39 अंक 46 हल्द्वानी सम्वत् 2081 सोमवार 22 अप्रैल 2024 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

मतदाता रहे मौन, पार्टियों के अपने दावे

अब मतगणना तक होंगे चर्चे

लोकसभा चुनाव के लिये देशभर में मुख्य मुकाबला भाजपा और इण्डिया गठबन्धन के बीच है। इसकी शुरूआत प्रथम चरण के मतदान के साथ हो चुकी है। उत्तराखण्ड सहित 21 राज्यों में मतदान के साथ ही यह बात भी दिखाई दी है कि देश बदल रहा है।

कार्यालय प्रतिनिधि

उत्तराखण्ड की जनता मतदान तक चुप रही और अब चर्चे शुरु हो चुके हैं। प्रदेश में 8243423 कुल मतदाता हैं इसमें से 4270597 पुरुष, 3972540 महिला व 286 ट्रांसजेंडर मतदाता हैं। कितने मत किस ओर पड़े यह तो मतगणना का पिटारा खुलने पर ही पता चल पायेगा लेकिन चुनाव पर्व की फिरकी लेने वाले चूक नहीं रहे हैं और हार-जीत को लेकर दांव भी लगाये जाने लगे हैं। पूरे चुनाव प्रचार से लेकर मतदान तक देखा गया कि प्रदेश में मुख्य लड़ाई भाजपा-कांग्रेस रही। विपक्ष की ओर से अन्य भी दावेदारी में रहे हैं लेकिन चुनाव का गणित कितना बना और कितना बिखरा यह सब जल्द पता चल जाएगा।

इस पर्वतीय प्रदेश में मतदाताओं को साधने और यहाँ से देश के अन्य राज्यों को सन्देश देने के लिये स्टार प्रचारकों में मोदी, प्रियंका, राजनाथ, योगी सहित कई आए। इनकी सभाओं में भीड़ जुटाने के लिये पार्टी स्तर पर तैयारियों के साथ प्रचार-प्रसार का प्रसाद वितरण हुआ लेकिन मत के लिये टोली बनाकर प्रचार करने वालों की कमी थी। इससे पता चलता है कि देश बदल रहा है। जिस प्रकार नेतागण मतदाताओं को एक दिन के लिये उपयोगी मान बैठे हैं, उसी प्रकार मतदाता भी चुप्पी साधने में भलाई समझ रहा है। मौके के साथ पलटी खाने को तैयारी चारों ओर साफ दिख रही है।

उत्तराखण्डियों के मुद्दों पर मंथन के लिये अगले माह होगा सम्मेलन

देहरादून। विदेश मंत्रालय के सहयोग से मई में विदेशों में रहने वाले प्रवासी उत्तराखण्डियों के मुद्दों को लेकर राज्य आउटरीच सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। इस सम्मेलन में पासपोर्ट, वीजा, आपातकालीन स्थिति में किसी प्रकार की समस्या समेत अन्य मुद्दों पर चर्चा की जाएगी।

सचिवालय में मुख्य सचिव राधा रतूड़ी ने सम्मेलन की तैयारियों को लेकर बैठक की। उन्होंने बताया कि विदेश मंत्रालय के सम्पर्क सीरीज के तहत उत्तराखण्ड में इस सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। जिसमें प्रवासी उत्तराखण्डियों की समस्याओं के साथ ही विदेशों में शिक्षा के लिए जाने वाले राज्य के युवाओं की समस्याओं पर विचार किया जाएगा।

उन्होंने उच्च शिक्षा विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि विश्वविद्यालय की ओर से छात्र-छात्राओं को जारी की जाने वाली अंक तालिका में प्राप्त अंकों के साथ ही सीजीपीए भी अंकित किया जाए। जिससे विदेशों में उच्च शिक्षण संस्थानों में दाखिले के समय विद्यार्थियों को कोई समस्या न हो। इसके अलावा उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाने वाले विद्यार्थियों को केन्द्र सरकार के स्तर पर दस्तावेजों की प्रक्रिया को सरल बनाने का सुझाव व प्रस्ताव भी सम्मेलन में रखा जाए।

उत्तराखण्ड की हुकूमत से रुक पाएगा पलायन?

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

1994 से ही उत्तराखण्ड को अलग राज्य बनाने की मांग होती रही जिसके लिए लम्बी राजनीतिक लड़ाई भी चली और कई लोगों ने इसके लिए कुर्बानियां भी दी थी। उत्तराखण्ड ने विकास के कई मुकाम छुए हैं। लेकिन कई ऐसे मुद्दे हैं जिन पर अब तक की सरकारें ठोस कदम नहीं उठा पाई हैं। 24 साल में अब तक 10 साल भाजपा और 10 साल कांग्रेस को मिले। दोनों सरकारों को उत्तराखण्ड में विकास करने का पूरा मौका जनता ने दिया लेकिन उत्तराखण्डियत का सपना कितना सच हो पाया।

स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार के मुद्दों को लेकर राज्य की जनता आए दिन सड़कों पर रहती है। पहाड़ी राज्य की भौगोलिक परिस्थितियों के हिसाब से उत्तराखण्ड में योजनाओं को लागू करने में कई तरह की समस्याएं भी आती हैं लेकिन जब भी सरकार की इच्छा शक्ति हुई तो योजना ने परवान चढ़ी, लेकिन जब भी राज्य सरकार वोटबैंक और अपने राजनीतिक लाभ के लिए विकास कार्यों को टालती रही तो इसका नुकसान भी जनता को उठाना पड़ा है। आज भी शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार सरकारों के लिए बड़ी चुनौती बना हुआ है। राज्य सरकारें पलायन को लेकर कोप्र ठोस नीति नहीं बना पाई। पलायन आयोग तो बना दिया गया लेकिन इसकी रिपोर्ट को किसी भी सरकार ने गम्भीरता से नहीं लिया।

पलायन आयोग की रिपोर्ट के मुताबिक उत्तराखण्ड की 66४ आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। इसमें से 80 प्रतिशत से अधिक आबादी पर्वतीय जिलों में हैं। वर्ष 2001 और 2011 के जनसंख्या आंकड़ों के मुताबिक राज्य के ज्यादातर पर्वतीय जिलों में जनसंख्या वृद्धि दर बेहद कम रही है। इस दौरान अल्मोड़ा और पौड़ी जिले की आबादी में 17,868 व्यक्तियों की सीधी कमी दर्ज की गई है। साफ है कि उत्तराखण्ड में पलायन आज भी बड़ी समस्या है। जिसको लेकर कोई भी सरकार गम्भीर नजर नहीं आता है। पलायन वह किस्सा है जो उत्तराखण्ड में सबसे ज्यादा सुना और कहा जाता है। हर राजनेता और सामाजिक चिन्तक भी पलायन को लेकर अपनी-अपनी चिन्ता व्यक्त करते रहते हैं। राजनीतिक दल हर चुनाव में पलायन रोकने के लिए ठोस योजनाएं बनाने के दावे करते हैं। जबकि गैर सरकारी संगठन इसके लिए सेमिनार के आयोजन कर अपना पसीना बहाते हैं। इस पूरी कवायद का लाभ राज्य को कितना मिला यह तो कहा नहीं जा सकता लेकिन सच्चाई यह है कि आज भी राज्य से प्रत्येक दिन 230 लोग पलायन कर रहे हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि पलायन पर चिन्ता केवल नारों-वादों और कागजातों में ही हो रही है जबकि हकीकत बिल्कुल विपरीत है। प्रदेश के सभी 13 जिलों से बाहर जाने वाले लोगों के आंकड़े प्रतिशत में दिए गए हैं। जिसके अनुसार नजदीकी कस्बों से 35 प्रतिशत लोगों ने पलायन किया है तो वहीं जिला मुख्यालय से 18 प्रतिशत लोगों ने पलायन किया है। इसी तरह राज्य के अन्य जनपदों से पलायन का आंकड़ा 24 प्रतिशत रहा है। राज्य से पलायन करने वाले लोगों का आंकड़ा बेहद चौंकाने वाला है।

यह बात तब ज्यादा गम्भीर हो जाती है जब 2018 के बाद तत्कालीन राज्य सरकार प्रवासियों के रिवर्स पलायन के लिए तमाम तरह की घोषणाएं और दावे किए थे लेकिन पलायन आयोग के आंकड़ों में 22 फीसदी लोग इन चार वर्षों में राज्य के बाहर पलायन कर गए जो कि सरकार की नीति और नीयत पर सवाल उठाने के लिए

शेष पृष्ठ 2 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

हालातों पर छोड़ना ठीक नहीं

लोकसभा चुनाव के लिये देशभर में प्रक्रिया जारी है और प्रथम चरण में मतदान के बाद की चर्चाएं शुरू हो चुकी हैं। अब परिणाम चाहे जो भी हो, यह सबके समझ आने लगा है कि खामखां भिड़ना समस्या का समाधान नहीं है। शायद यही कारण है कि महत्वाकांक्षी नेता अपने रास्ते बनाने के लिये समझौता करने लगे हैं और कारोबार को दो-चार कर आगे बढ़ाने वाले अपने रास्ते मजबूत करने लगे हैं। इनके अलावा फाइलों पर हस्ताक्षर करवाने वाले दलाल अपनी सच-झूठ की चादर पूरी बिछा चुके हैं।

चुनाव प्रचार के लिये अब पहले जैसा उत्साह किसी में नहीं है। पूरा चुनाव सोशल मीडिया पर छेड़ा गया और पार्टियों से बस्ता लेकर बूथ पर बैठने वाले रश्म निभा रहे हैं। बिल्ले-पर्चे-झण्डे लेने के लिये मचने वाली होड़ भी नहीं दिखाई दे रही है। यही कारण है कि सिर्फ सभा स्थलों पर झण्डे बैनरों की बाढ़ दिखाई देती रही है। घर-घर घूमकर बोट मांगने वालों ने भी नेता जी के रोड शो में शामिल होकर अपनी उपस्थिति दर्ज करवा दी।

चुनाव आयोग की सख्ती भी एक कारण है कि तय वाहनों से ही प्रचार होना है, प्रचार सामग्री भी तय बजट में हो, अन्य तैयारियां भी सीमारेखा में हो और इन सबका हिसाब भी देना है। चुनाव आयोग की यह सख्ती जरूरी भी है अन्यथा लोभ-लालच के लिये कई तरह के उपक्रम अपनाए जा सकते हैं। पकड़ या शिकायत की डर से अनावश्यक खर्चों पर रोक लगी है।

इतना सब होने पर भी चुनाव लड़ना सरल नहीं रह गया है। इसमें अथाह रुपया खर्च होता है। जब प्रचार करने वालों में उत्साह नहीं है, चुनाव आयोग की ओर से भी खर्चे का ब्यौरा मांगा जा रहा है, आंखिर खर्च कहाँ और क्यों होता होगा? बदलते और तेज गति के समय में चमक-दमक का जोर है। तत्काल परिणाम को उतावले लोग तैस में आकर निर्णय लेने लगे हैं। इन्हीं सब उतावले लोगों को बस में करने के लिये खर्चने वाले सफल दिखाई दे रहे हैं। लेकिन लम्बे समय के लिये यह सब झूठा साबित होने वाला खेल है। इसलिये जन को तंत्र बनाए रखने के लिये हम-हमेशा सतर्क रहना होगा। विश्व के हालात बदल चुके हैं। ऐसे में चुनाव को इन नेताओं के हालातों पर छोड़ना ठीक नहीं। इसका परिणाम जनता को ही भुगतना होता है।

फसक

दाज्यू, मतदान के बाद खेल खतम पैसा हजम ठैरा

पगल्योट में उलझाकर अपना मामला सीधा कर लेते हैं बल

दाज्यू, लोकसभा चुनाव के लिए वोट डालने के बाद खिमदा गाँव चले गये हैं। कह रहे थे- 'वोटबाजी के बाद कौन आता है? हमने तो बंजर हो रहे मकान जमीन ठीक करनी है।' दाज्यू, खिमदा जैसे गिनती भर के लोग अपने आप से जो कुछ कर पा रहे हैं, बहुत है। आप जानने ही वाले हुए, मतदान के बाद खेल खमत पैसा हजम ठैरा। कोई पूछने-गछने वाला नहीं हुआ। सरकार बनाने वाले बनाते रहें, निचोड़ने के लिये पब्लिक ठैरी ही। दाज्यू, चुनाव के पगल्योट में उलझझकर अपना मामला सीधा कर लेते हैं बल। चुनाव लड़ रहा गोपी पार्टी टिकट तो ले आया था लेकिन हाल बुरे ही हैं। जनता भी हैरान है, कभी न दिखने वाले गोपी के होटल-रिजार्ट का काम कर रह है बल। उसे क्या चाहिये पार्टी, क्या चाहिये वोट, क्या चाहिये लोक-परलोक। चल रहे सट्टे ही उसका इमान हुआ। ऐसे में किसको क्या समझाएं? अभी देशभर में प्रक्रिया चल रही है। मोदी ज्यू कह रहे हैं- '370 हटने के दर्द में टुकड़े-टुकड़े गैंग की भाषा कांग्रेस बोलने लगी है।' दूसरी ओर राहुल बरस रहे हैं- 'जुमलेबाजी से देश का मजाक बनाया जा रहा है।'

दाज्यू, नानकमत्ता में बाबा तरसेम की गोली मारकर हत्या करने वाला शूटर अमरजीत अन्तत: मुठभेड़ में मारा गया। अमरजीत को लेकर कई बातें चल रही हैं। उसका खालिस्तानी आतंकियों से भी कनेक्शन था बल। पुलिस वाले साब कह रहे हैं- 'हत्याकाण्ड के पीछे बड़े लोगों का हाथ है।' दाज्यू, दुनिया में कितने तरह के तूफान चल रहे हैं समझना बहुत कठिन है। कबीर, रहीम की वाणी पर कौन अमल करेगा?

चम्पावत में चुनाव प्रशिक्षण में अनुपस्थित होने पर पता चला कि मास्साब एक साल से गायब हैं। ऐसे में निलम्बन की कार्रवाई हुई। दाज्यू, चूल्हा-चरखा की कहानी भी अजब है। एसएसजे विश्वविद्यालय में बीएससी की छात्रा को 600 में से 684 नम्बर मिले हैं बल। उच्चशिक्षा के मामले में क्या कहा जाए? वैसे भी इस विश्वविद्यालय के बनने के साथ ही कथा-कहानी बहुत हो चुकी हैं। परीक्षाफल समय से घोषित करने का पुरस्कार भी मिल चका है। दाज्यू, अब तो सच-झूठ सब बराबर लगने लगा है। बागेश्वर में छेड़खानी का आरोपी प्राध्यापक दोषमुक्त करार दिया है। कालेज पढ़ने वाली बालिका की माता जी ने कोतवाली में तहरीर दी थी कि असाइनमेंट जमा करने कई बालिका से प्राध्यापक ने छेड़खानी की है।

दाज्यू, अब जून का इन्तजार है। चुनाव परिणाम आने के बाद अपना बब्बू ठेकेदारी करने वाला है।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

धर्मान्तरण को लेकर मौलबी को हटाया

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर वक्फ बोर्ड ने कथित जबरन धर्म परिवर्तन को लेकर एफआईआर दर्ज होने के कुछ दिनों में हजरतबल दरगाह के मौलबी को पद से हटा दिया है और उनकी भूमिका की जांच के लिए एक समिति का गठन किया है।

भारत के साथ पनडुब्बियां बनाएगा जर्मनी

भारत में जर्मनी के राजदूत फिलिप एकरमैन ने कहा कि जर्मन सरकार छह नई पारम्परिक पनडुब्बियों के निर्माण के लिये भारतीय नौसेना के साथ बातचीज कर रही है, जिसमें जर्मन फर्म थिसेनक्रुप मरीन सिस्टम ऐ के रूप में भारतीय मझगांव डॉक्याड्र्स लिमिटेड के साथ साझेदारी कर रही है।

आतंकी रमनदीप की सम्पत्तियां जब्त

नई दिल्ली। राष्ट्रीय जाँच एजेंसी ने खालिस्तान समर्थक गैंगस्टर-आतंकवादी गठजोड़ से जुड़े अपराधिकयों के खिलाफ कार्रवाई तेज कर दी है। इसी क्रम में एनआईए ने घोषित आतंकी रमनदीप सिंह उर्फ रमन की पंजाब के फिरोजपुर जिले में तिब्बी कलां इलाके के झोक नोध सिंह गाँव सहित अन्य जगह से अचल सम्पत्तिया जब्त की।

पाकिस्तान खतरनाक यात्रा देशों की सूची में

इस्लामाबाद। ब्रिटेन के विदेश राष्ट्रमण्डल और विकास कार्यालय ने पाकिस्तान को यात्रा के लिये बहुत खतरनाक देशों की सूची में डाला है। एफसीडीओ ने ब्रिटेन नागरिकों को एडवाइजरी जारी कर तूफान, महामारी, भुखमरी और युद्धग्रस्त क्षेत्रों में जाने से मना किया है।

चीन का दावा- सकारात्मक प्रति हुई है

बीजिंग। चीन के विदेश मंत्रालय ने दावा किया है कि सीमा विवाद को सुलझाने के लिए दोनों देशों ने बड़ी सकारात्मक प्रगति की है। पिछले कुछ दिनों में यह दूसरी बार है जब चीन ने अमेरिका पत्रिका न्यूजवीक में मोदी के साक्षात्कार पर प्रतिक्रिया दी है।

भर्ती घोटाले में ३६५ करोड़ की संपत्ति जब्त

नई दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय ने पश्चिम बंगाल में सहायक शिक्षक भर्ती से जुड़े घोटाले में 230.6 करोड़ रुपये मूल्य की अचल सम्पत्तियां जब्त की हैं। जिसमें एक फ्लैट और कुछ भूखण्ड शामिल हैं। वहीं प्राथमिक शिक्षक भर्ती घोटाले से जुड़े एक अन्य मामले में 135 करोड़ की सम्पत्ति जब्त की है।

उत्तराखण्ड की....

प्रथम पृष्ठ का शेष

काफी है। सरकारी नीतियां पलायन रोकने में नाकाम ही रही हैं। हालांकि देश से बाहर भी उत्तराखण्ड के लोगों का पलायन हुआ है जिनका आंकड़ा 1 प्रतिशत है। पलायन आयोग द्वारा पलायन के कई कारणों का उल्लेख अपनी रिपोर्ट में किया गया है। दिलचस्प बात यह है कि आयोग द्वारा 2011 से 18 में जो कारण बताए हैं, वही सभी कारण 2018-22 में भी बताए गए हैं यानी इन दोनों कालखण्डों में पलायन के कारण सरकार और प्रशासन के अलावा सभी लचतकों को अच्छी तरह से ज्ञात थे लेकिन इनके निवारण के लिए कोई ठोस कार्यवाही नहीं की गई। आयोग के अनुसार रोजगार, चिकित्सा, शिक्षा बुनियादी सुविधाओं की कमी जैसे सड़क, बिजली, पानी और कृषि और पैदावर में कमी जिसमें वन्य जीवों का कृषि पर आतंक, परिवार और रिश्तेदारों के बेहतर जीवनशैली से प्रभावित होते जैसे कमोवेश यही सब कारण विगत 12 वर्षों से उत्तराखण्ड की जनता के पलायन के लिए जिम्मेदार बताए गए हैं। आंकड़ों को देखें तो 50 प्रतिशत लोगों ने आजीविका के लिए पलायन किया है तो 8-83 फीसदी लोग चिकित्सा, स्वास्थ्य की कमी के चलते पलायन को मजबूर हुए हैं। शिक्षा की कमी के चलते 15-21 और 5-44 प्रतिशत लोग कृषि की कमी यानी खेती में फसलों की कम उत्पादकता के कारण पलायन कर गए। यही नहीं 5-61 प्रतिशत वे लोग हैं जिनकी खेती को जंगली जानवरों द्वारा हानि पहुँचाई जाती रही है जिसके चलते उन्होंने पलायन का मार्ग चुना है। इसमें सबसे ज्यादा गौर करने वाली बात यह है कि विगत पाँच वर्षों में खेती का रकबा घटा है बावजूद इसके प्रदेश को केन्द्र सरकार से दो बार कृषि कर्मणा पुरस्कार भी मिल चुका है। साथ ही किसानों की आय को दोगुना करने के लिए केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा करोड़ों का बजट खर्च किया जा रहा है। हैरानी इस बात की है कि करोड़ों खर्च करने के बावजूद कृषि उत्पादन में भारी कमी और खेती को जंगली जानवरों से हो रही क्षति के कारण कुल 11 प्रतिशत लोगों का पलायन हुआ है जो कि अपने आप में बेहद चौंकाने वाला आंकड़ा है। 8 प्रतिशत से ज्यादा लोगों ने अन्य विशेष कारण से पलायन किया है। हालांकि इन कारणों का खुलासा पलायन आयोग द्वारा नहीं किया गया है लेकिन जानकारों की मानें तो इसमें ज्यादातर सामाजिक कारण हैं जो जातिगत व्यवस्था से हो सकते हैं, साथ ही किसी परिवार के एक सदस्य द्वारा नगरीय क्षेत्रों में सरकारी या निजी क्षेत्र में नौकरी, रोजगार आदि के मिलने से उसका परिवार भी पलायन कर रहा है। इस बारे में स्वर्गीय इन्द्रमणी बड़ोना कहा करते थे कि जिस गाँव में सड़क बनती है तो सबसे पहले गाँव सड़क में आ जाता है फिर कस्बे में और फिर नगरीय क्षेत्र में पलायन बढ़ता है। वास्तव में यह एक बेहद सोचनीय विषय है कि जिस सड़क को गाँव में पलायन रोकने का बड़ा माध्यम माना जाता है वही सड़क गाँव से पलायन का एक माध्यम बन जाती है। भले ही यह पलायन अस्थाई या नजदीकी क्षेत्रों में ही होता हो लेकिन यह भी पलायन का एक रूप ही है। राजधानी का तमगा ओढ़े देहरादून जैसे जिले के 5 ऐसे विकासखण्डों के 239 ऐसे गाँव तोक मजरे हैं जो सड़कों से नहीं जोड़े जा सके हैं। इनमें 210 गाँव ऐसे हैं जो सड़क से 5 किमी दूर हैं और 24 ऐसे गाँव हैं जिनकी दूरी सड़क से 6 से लेकर 10 किमी तक है। यह अपने आप में ही बेहद चौंकाने वाला मामला है कि 23 वर्षों से राजधानी और विकसित जिला होने के बावजूद आज भी 210 गाँव सड़कों की सुविधा से वंचित चले आ रहे हैं। हैरानी की बात यह है कि हर सरकारी कर्मचारी और अधिकारी यहाँ तक कि ब्यूरोक्रेट पर अपनी पोस्टिंग देहरादून जिले में करवाने के लिए तमाम तरह से हथकण्डे अपनाता है। साथ ही तमाम तरह से विभागों के मुख्यालय तक इसी देहरादून में होने के बावजूद जिले के गाँवों में सबसे बुनियादी सुविधा तक नहीं दी जा सकी है जिसके चलते राज्य से पलायन होने का एक कारण सड़क सुविधा को माना जा रहा है। पहाड़ी राज्य की भौगोलिक परिस्थितियों के हिसाब से उत्तराखण्ड में योजनाओं को लागू करने में कम्र तरह की समस्याएं भी आती हैं। लेकिन जब भी सरकार की इच्छा शक्ति हुई तो योजना ने परवान चढ़ी किन्तु जब भी राज्य सरकार वोटबैंक और अपने राजनीतिक लाभ के लिए विकास कार्यों को टालती रही तो इसका नुकसान भी जनता को उठाना पड़ा है। आज भी शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार सरकारों के लिए बड़ी चुनौती बना हुआ है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

इतिहास

पिता अमर सिंह(लाटा) का उतार-चढ़ाव भरा जीवत और पं.नैन सिंह का अन्वेषण सफर

जगदीश सिंह बृजवाल

आधुनिक जोहारियों के युगपुरुष धाम सिंह रावत की आठवें पीढ़ी में उत्पन्न कौन्चयो बुढ़ा से उत्तरोत्तर जोहार के शौका रावत कौम वंशावली का विस्तार देखा जा सकता है। जोहार में कुमाऊँ के चंदशासन काल से जोहार में बुढ़ाचारी पद प्राप्त हुआ था, सबसे पहले भादो बुढ़ा मिरमवाल को बुढ़ाचारी पद प्राप्त हुआ। कोनच्यो बुढ़ा के पाँच पुत्रों में धामा बुढ़ा छोटा पहले क्रम का पुत्र था। जिनके तीन पत्नियों से कुल 10 पुत्र उत्पन्न हुए। अमर सिंह (लाटा) का क्रम 9 वें नम्बर में था। लाटा की चार पत्नीयां- नित्वाली, लखमा, जसुली, पदमा थी। तीसरी,चौथी पत्नी जसुली, पदमा से 6 सन्तान उत्पन्न हुए थे। जिसमें जसुली को महान अन्वेषक सी.आई. नैन सिंह की माता होने का श्रेय मिला। पदमा का पुत्र कल्यान भी अन्वेषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा चुका है।

पंडित नैन सिंह रावत मिलमवाल के पिता अमर सिंह (लाटा) का जीवन कहानी बहुत उतार-चढ़ाव भरा रहा है, जन्म सन् 1795 में हुआ था जिसने जोहार में गोरखाओ के शासन की त्रासदी 'गोरखियोल' भी अपनी आँखों से देखा ही होगा। पहला विवाह नीती-माणा केसर सिंह के बहन नित्वाली से हुआ। तभी अपने 25 वर्ष के युवावस्था में मिलम में निवास करते अपने गाँव के ही सयाना राठ में विवाहित बिलज्वालों के पुत्री लखमा से प्रेम प्रसंग की कहानी चर्चा में आ गयी। लाटा का दुस्साहस सभी भाई बिरादरी को रास नहीं आया। समाज से बहिष्कृत तथा भाईयों द्वारा सम्पत्ति से भी बेदखल कर दिया गया था।

लाटा की विवशता गाँव का त्याग करना पड़ा। अपने दोनों पत्नियों के साथ मुनस्यारी के सम्प्रति गोरी पार बरपटिया गाँव भटकूरा में रहने लगे थे। 27 वर्ष वनवास के पश्चात पदमा धपवाली पत्नी के साथ अपना गाँव मिलम वापस आया था।

भटकूरा में अपनी पहली व दूसरी पत्नी के साथ कठिनाइयों का जीवन व्यतीत करते एक बार जब किस्मत कुमाऊँ कमिश्नर ट्रेल के अदालत में भाईयों से प्राप्त अपनी सम्पत्ति का हिस्सा हेतु आवेदन किया गया, जिसमें सफलता न मिलने पर निराश-हताश दोनों पत्नियों ने गोरी नदी में कूदकर आत्महत्या कर लिया। अमर सिंह का दु:ख कम होने का नाम नहीं ले रहा था।

सन् 1825 में जुमली के जुमाल राजपूतों के लड़की से विवाह कर लिया जो तवाघाट धारचूला के निवासी थे। समजांग 1826 के बाद नैनसिह का जन्म 21 अक्टूबर सन् 1830 में हुआ था। जसुली को ही महान अन्वेषक सी.आई. नैन सिंह के माता कहलाने का श्रेय प्राप्त है। वे चार भाई-बहन- समजांग, नैन सिंह, बहन मागा जसुली की सन्तानें थे। किन्तु 1837 में 18 वर्ष की आयु में माता जसुली का देहान्त हो गया। अमर सिंह लाटा की परेशानी जस की तस ही बनी रही।

पिता लाटा द्वारा तब पदमा धपवाली के साथ चौथा विवाह सम्पन्न किया गया। उसके पश्चात ही अपना घर मिलम वापसी सन् 1847 में किया किन्तु भाईयों को सम्पत्ति से हिस्सा देना मंजूर न था। सन् 1848 में 53 साल की उम्र में पिता का देहावसान भी हो गया। तब अनाथ नैन सिंह भाइयों का परिवार गर्दिश में जीवन व्यतीत करते रहे। लाटा पिता का उथल-पुथल भरा जीवन चर्चा ही उसे महान अन्वेषक नैन सिंह व कल्यान के पिता होने का गौरव प्राप्त करता है।

पहले माता जसुली फिर पिता के स्वर्गवास हो जाने के कारण परिवार असहाय सा हो गया। तब परोपकारी मानी बुढ़ा बड़ा ने दयाभाव दिखाते अपने भाईयों से लाटा के हिस्से की सम्पत्ति दिलवाने की कोशिश की गई, जिसमें सफलता नहीं मिली तब स्वयं कुछ रुपए भेड़-बकरी, जानवर खरीदने के लिए देने की बात कही। मानी बुढ़ा परोपकारी व्यक्ति जिसने जोहार के रास्ते नहर नामक स्थान पर गोरी नदी का प्रवाह बदलकर नहर निकाल दिया था, जिससे रास्ते के आवागमन सुविधा से जनहित का कार्य किया, जिसके अन्दर समाज सेवा की भावना सदैव रहता था।

नैन सिंह रावत मानी बुढ़ा के सुझाव पर कुछ सोच बिचार कर ही रहा था, तभी सोतेली माँ से झगड़ा हो जाने के कारण तथा अपने निठल्लेपन से भी दुखी था। 21 वर्ष की उम्र में घर त्याग कर मिलम, मुनस्यारी, दानपुर, बधाण, जोशीमठ बद्रीनाथ होते हुए भोटान्तिक क्षेत्र नीती-माणा पहुँच गया था।

नीती-माणा में अमरदेव मार्छा जो मानी बुढ़ा का ससुर था, मुलाकात हुई। अमरदेव मार्छा साधन सम्पन्न व्यक्ति था। उसने अपना स्वर्गीय भाई निरौला की पुत्री उमती से नैन सिंह रावत का विवाह करा दिया। जिस बारात में नैन सिंह दूल्हा, स्वयं बाराती भी था। नीती-माणा में भी लोग जोहारियों की तरह कार्य करते थे। घर जमाई के रूप में तीन साल बिताया गया, जो उसे रास नहीं आया। एक दिन बिना अमरदेव को बताए मिलम जोहार की ओर चला आ गया। सभी भाई बिरादर प्रसन्न हुए थे किन्तु गर्दिश कम नही हुआ था।

अपनी कठिनाई को दूर करने के लिए मानी बुढ़ा से 600 रूपये उधार लेकर भेड बकरी, सुरागाय आदि जानवर खरीदने कुछ अन्य जोहारी जीता जंगपांगी, बीजू धर्मशक्तू के साथ शिमला, विलासपुर, कांगड़ा चम्बा, भरमौर तक यात्रा किया। वे तिब्बत होते मिलम जोहार आना चाहते थे। दुर्भाग्यवश रास्ते में लगभग 300 जानवर बीमारी से मर गये। सिर्फ 100 जानवर घर तक पहुँचा था। श्रम सम्पदा सब कुछ बर्बाद नैन सिंह निराश-हताश घर पहुँचा था।

नैन सिंह की हालत देख सोतेली माँ ने अपने दो पुत्र गजराज, कल्यान को लेकर अलग रहने का निर्णय कर लिया। अब नैन सिंह और उनके भाइयों की माली हालत कमजोर तथा कर्जवान हो गया, कठिनाइयां बढ़ती ही गई।

नैन सिंह पुन: नये सिरे से व्यापार से जुड़ने का मन बना ही रहा था तभी उसने सुना की अंग्रेज अधिकारी अडोल्फ, रॉबर्ट, हरमन, स्लोगेन्टवाइट सर्वे वैज्ञानिक तुर्कमेनिस्तान यात्रा पर जा रहे हैं जिन्हें सहयोगियों की आवश्यकता है। नैन सिंह को अपने गरीबी व कर्ज से उभरने का उपाय सूझने लगा था। भाई मानी सिंह (कम्पासी) जो हेनरी रिचर्ड के साथ मानसरोवर यात्रा कर चुका था। मानी का यात्रा में जाना निश्चित देख नैन सिंह ने मानी सिंह से मुलाकात कर अपनी स्थिति की सभी जानकारियां उसे बता दिया किन्तु मानी सिंह अपने साथ ले जाने को तैयार न था। जोहारी बोली के शब्दों में- 'ह्यूहै कनन आबने हन बिगौर' (इसे ही कहते है अपना ही दुश्मन होना) तब परोपकारी मानी बुढ़ा (ताऊ) तथा उनके भाईयों के दवाब से यात्रा पर ले जाने को तैयार हुआ। यात्रा भर बड़े भाई की प्रताड़ना को उपकार समझकर अंगीकार किया। अन्तत: गौरों के साथ इंग्लैंड जाने के लिए भी रोक दिया। इस यात्रा से नैन सिंह ने जो सौ-दौ रुपए कमकर घर लाया था, क़र्ज़ का ब्याज चुक्ता करने में ही चला गया।

सन् 1858 में जब नैन सिंह अपने छोटे भाई मागा के साथ बागेश्वर को जा रहा था नैन सिंह अपने आर्थिक तंगी से निजात पाने के लिए उधेड़बुन में था। जल्दी ही उसके जीवन का एक अध्याय प्रारम्भ होने वाला ही था जिसका अन्देशा उसे नहीं था। नैन सिंह ने कपकोट में हेनरी स्ट्रेची से मुलाकात की तथा अपनी पूर्व यात्रा तुर्किस्तान यात्रा विवरण भी दिया। हेनरी ने अपने साथ नौकर के रूप में सम्मिलित कर लिया। मुनस्यारी, नामिक ग्लेशियर, पिण्डारी ग्लेशियर होते हुए अल्मोड़ा पहुँच गए जहाँ स्ट्रेची द्वारा डिप्टी कमिश्नर कालविन तथा शिक्षा विभाग के होने वाले इंस्पेक्टर से नैन सिंह का परिचय करा दिया।

सन् 1859 में नैन सिंह को मिलम जोहार में वर्नाकुलर विद्यालय में अध्यापक के रूप में नियुक्ति मिल गई। जिसमे 15 रुपया माह का वेतन ब्रिटिश सरकार द्वारा निर्धारित था किन्तु पिता का अपराध बोध के कारण नैन सिंह रावत को अध्यापक बनना अच्छा नहीं लगा। लोगों ने अपने बच्चे स्कूल नहीं भेजे, बल्कि दूसरे अध्यापक की मांग कर डाली। शासन ने उनकी एक नहीं सुनी। नैन सिंह ने अपने को योगतम अध्यापक के रूप में सिद्ध कर दिया। नैन सिंह को इस पेशे से अपनी कठिनाई दूर न होने की सम्भावनाएं नहीं थी। कुछ अलग सोच विचार भी करने लगा था।

बागेश्वर में कर्नल स्मिथ को अपना दु:ख प्रकट किया। कर्नल ने उसे सुझाव दिया कि यहाँ कोई ऐसा पद नहीं है जिससे उसको अधिक वेतन दिया जाए। यदि वह चाहे तो देहरादून स्थित ट्रिगनोमैट्रीकल कार्यालय मे नौकरी कर सकता है जहाँ उसे 40 रूपया वेतन मिलेगा। उसके पश्चात हिमालय पार बादशाही मुल्क में अन्वेषण कार्य करना होगा। नैन सिंह को सिर्फ अपने गर्दिश के दिन दूर किये जाने पर प्रसन्नता हो रही थी। इतिहास बनाने का अंदेशा अंश भर भी नहीं था।

अन्वेषण सफ़र- पिता लाटा का उथल-पुथल भरी जिन्दगी पण्डित नैन सिंह रावत का प्रदार्पण, सन् 1862 में सर्वे विभाग से 21 जनवरी 1862 कर्नल स्मिथ के नाम पत्र प्राप्त हुआ था। सर्वे विभाग की ओर से 100- 100 रूपए बतौर सहायता अलग अलग भेजे गये। जिसे मानी सिंह व नैन सिंह को दिया जाना था। यह भी बताया गया कि मानी सिंह को 50 रूपए प्रति माह तथा नैन सिंह सिंह को 40 रूपया प्रति माह दिया जाएगा। नैन सिंह का अन्वेषकी जीवन सफ़र यात्रा का प्रारम्भ हो गया। अपनी पाँच डायरी चार महान यात्राएं तीन डायरी की स्पष्ट उपलब्धता तथा अपने सत्यनिष्ठा, कर्त्तव्यपरायणता, जीवटता, विद्वता से सिद्ध कर दिया कि दुनिया के महान अन्वेषकों के साथ उनका नाम भी सम्मानपूर्वक लिया जायेगा।

मिलमवाल रावत बन्धु- चचेरा भाई मानी सिंह रावत, किसन सिंह रावत, सौतेला भाई कल्याण सिंह रावत ने भी अन्वेषण इतिहास में अपना नाम दर्ज किया है किन्तु पण्डित नैन सिंह रावत मिलमवाल की कार्य शैली विशिष्ट विशेषताओं ने उसे महानता के श्रेणी में रख दिया। हर जोहारी को उन पर फक्र है जिसने शौका समाज को गौरवान्वित कर इतिहास बना डाला। अपने इन सभी विभूतियों, महाविभूति को सदैव कोटि कोटि नमन करते रहेंगे।

ज्योतिष की बातें - 174

23 अप्रैल 2024 को मंगल समराशि मीन में प्रवेश करेगा । वहाँ पर राहु से युति भी करेगा अत: गोचर में अंगारक योग का निर्माण होगा। अत: मंगल अत्यन्त निर्बल रहेगा। फिर भी अगले 40 दिन मंगल मकर, तुला व वृषभ राशि के जातकों को पराक्रम आदि अपने कारक विषयों में शुभफल प्रदान करेगा। कर्क और सिंह राशि को सामान्य फल प्रदान करेगा। शेष राशि के जातकों को अभी धैर्य रखना चाहिए।

24 अप्रैल 2024 को शुक्र अपनी उच्चराशि छोड़कर समराशि मेष में प्रवेश करेगा। वहाँ पर शनि की पाप दृष्टि भी होगी अत: शुक्र अत्यन्त निर्बल रहेगा। फलत: शुक्र अगले 26 दिन प्राय: सभी जातकों को शुभफल प्रदान करने में असफल रहेगा।

25 अप्रैल 2024 को बुध मीन राशि में मार्गी हो जाएगा अत: बुध अपने कारक विषयों में शुभाशुभ फल अब सामान्य रूप से प्रदान करेगा।

28 अप्रैल 2024 को शुक्र मेष राशि में ही पूर्व दिशा में अस्त हो जाएगा अत: अगले 69 दिन विवाह आदि शुभ कार्य स्थगित रहेंगे।

हनुमान जयन्ती- चैत्र शुक्ल पूर्णिमा सूर्योदय व्यापिनी तिथि में हनुमान जयन्ती का पर्व मनाया जाता है तद्नुसार मंगलवार 23 अप्रैल 2024 को हनुमान जयन्ती उत्साह पूर्वक, समारोह पूर्वक सम्पन्न की जाएगी। इस दिन हनुमान जन्म का प्रसंग श्रवण करना चाहिए और सुन्दरकाण्ड का पाठ करना चाहिए। शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 65

प्रजाातंत्र बनाम राजतंत्र

कुछ लोगों का कहना है कि प्रजातन्त्र श्रेष्ठ शासन प्रणाली है तो कुछ लोगों का यह भी कहना है कि राजतन्त्र श्रेष्ठ शासन प्रणाली है। दोनों में यदि देखा जाए तो राजतन्त्र में भी राजा मूर्ख अथवा विद्वान हो सकता है और प्रजातन्त्र में भी शासक मूर्ख अथवा विद्वान हो सकता है। राजतन्त्र में भी प्रजा के विद्रोह कर देने का भय रहता है और प्रजातन्त्र में भी अगले चुनाव में हार जाने का भय रहता है। राजतन्त्र में भी राजा क्रूर हो सकता है प्रजातन्त्र में भी शासक तानाशाह हो सकता है। ऐसा देखा जाता है। विश्व में जहाँ जहाँ पर प्रजातन्त्र स्थापित है, चुनाव होते हैं वहाँ की जनता भी अत्यधिक त्रस्त, दु:खी और गरीब देखी जाती है। जहाँ पर राजतन्त्र स्थापित है, चुनाव नहीं होते हैं, वहाँ की प्रजा भी खुशहाल, प्रसन्न, स्वस्थ और विकसित देखी जाती है। जिन देशों में राजतन्त्र स्थापित है वहाँ पर चुनाव प्रणाली स्थापित करने के लिए जनान्दोलन होते रहते हैं और नेपाल में जहाँ प्रजातन्त्र स्थापित हो गया है, वहाँ पर पुन: राजतन्त्र स्थापना की मांग हो रही है।

अत: यह बिल्कुल नहीं कहा जा सकता कि राजतन्त्र श्रेष्ठ है अथवा प्रजातन्त्र। वास्तव में शासन प्रणाली खराब अथवा अच्छी नहीं बल्कि शासक ही खराब अथवा अच्छा होता है। पहले कहा जाता था कि 'को नृप होय हमें का हानी' अर्थात् पहले राजा का सामान्य व्यक्ति के जीवन में कोई हस्तक्षेप नहीं होता था लेकिन आजकल यहाँ तक हस्तक्षेप हो गया है कि व्यक्ति क्या पढ़ेगा, कहाँ पढ़ेगा, क्या खाएगा, इलाज कहाँ कराएगा, खाना कैसे बनाएगा, आदि इन छोटी-छोटी बातों पर शासक का नियन्त्रण हो गया है। राजा कोई भी हो आम जनता का उत्पीड़न नहीं होना चाहिए, दैनिक जीवन में हस्तक्षेप शासक को नहीं करना चाहिए ।

-सरल

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

खलिया टॉप मुनस्यारी का हेड है जिसे सुरक्षित रखना होगा

बलाती फार्म तथा खलिया टॉप क्षेत्र मानव हस्तक्षेप शून्य हो

जिलाधिकारी ने मुख्य सचिव को एक प्रस्ताव बनाकर भेजने पर सहमति दी

मुनस्यारी। प्रसिद्ध खलिया टॉप और बलाती फार्म को सुरक्षित रखे जाने के लिये क्षेत्रवासियों ने कमर कस ली है। मल्ला जोहार विकास समिति द्वारा तमाम संगठन इसके लिये आगे आ चुके हैं। मामले को तीखा होता देख स्थानीय प्रशासन ने भी लोगों से बातचीत को लेकर बैठक की परन्तु कोई हल नहीं निकलने पर जिला प्रशासन से इसमें हस्तक्षेप को कहा गया।

मल्ला जोहार विकास समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने कहा कि खलिया टॉप मुनस्यारी क्षेत्र के लिये स्थल के साथ ही पानी का स्रोत है। बर्फबारी के समय अनेक टूरिस्ट इसे देखने जाते हैं। साथ ही यहाँ विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षी निवास करते हैं। ऐसे स्थान को सुरक्षित रखना जरूरी है। इसे किसी भी तरह से खुर्द-बुर्द न किया जाए, इसके लिये कई बार शासन-प्रशासन का ध्यान आकर्षित किया गया है। स्व. रघुनन्दन सिंह टोलिया जो पूर्व मुख्य सचिव उत्तराखण्ड सरकार में थे वह भी हमेशा खलिया टॉप को सुरक्षित रखने की बात शासन-प्रशासन से किया करते थे। यह खुली या टॉप मुनस्यारी का हेड यानी सर है, जिसे सुरक्षित रखना जरूरी है। क्षेत्रवासी यहाँ किसी भी प्रकार का निर्माण या सड़क निर्माण करने के विरुद्ध हैं। मुनस्यारी क्षेत्र जोन-5 के अन्तर्गत आता है, इसलिये सुरक्षित रखना हम सब लोगों की नैतिक जिम्मेदार है। इसी प्रकार बलाती फार्म के अन्तर्गत उद्यान विभाग की भूमि सरकार के द्वारा लेकर आर्मी के लिये तैयार किया जा रहा है, आर्मी के लिये अलग से जगह सुनिश्चित किया जाना जरूरी है। उक्त स्थल को स्वरोजगार से जोड़ने के लिये प्रयोग किया जाए। सीमा सुरक्षा के लिये आर्मी को पूरा समर्थन है लेकिन उनकी बलाती फार्म की जगह और बेहतर व्यवस्था की जाए। सीमान्तवासी भी देश सेवा में अग्रणीय हैं।

बताते चलें कि खलिया टॉप और बलाती फार्म को उसके प्राकृतिक स्वरूप पर बने रहने देने की मांग को लेकर क्षेत्रवासियों ने चुनाव बहिष्कार तक की चेतावनी दे डाली थी। इसके बाद एक बैठक का आयोजन किया गया इसमें कोई हल नहीं निकल पाया। प्रशासन द्वारा तय की गई बैठक में भारतीय सेना सहित प्रमुख विभाग के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद नहीं रहे। जिसको लेकर पंचायत प्रतिनिधियों ने रोष व्यक्त किया। बैठक में तय किया गया है कि चुनाव से पहले जिलाधिकारी की अध्यक्षता में शीघ्र एक बैठक पिथौरागढ़ में बुलाई जाएगी। जिसमें हल निकालने का प्रयास किया जाएगा।

जनप्रतिनिधियों ने स्पष्ट कर दिया कि इन हालातों पर वह चुनाव बहिष्कार करेंगे। चीन सीमा से लगे 25 ग्राम पंचायतों के चुनाव बहिष्कार को सफल बनाने के अभियान में जुटने की तैयारी भी हुई। तहसीलदार चन्द्रप्रकाश आर्य की उपस्थिति में हुई बैठक में वन विभाग तथा उद्यान विभाग के स्थानीय अधिकारी उपस्थित रहे। इन विभागों के साथ ही भारतीय सेना सहित अन्य विभागों के जिला स्तर का एक भी जिम्मेदार अधिकारी बैठक में उपस्थित नहीं रहने के कारण आम सहमति के लिए बुलाई गई बैठक में उपस्थित जनप्रतिनिधियों का गुस्सा और अधिक बढ़ गया। बैठक में तय किया गया है कि वन विभाग, कुमाऊँ मण्डल विकास निगम, पर्यटन विभाग, खेल विभाग इस क्षेत्र में बने अपने स्ट्रक्चर की फोटो तथा माप पर एक रिपोर्ट बनाकर तहसीलदार के कार्यालय में जमा करेंगे।

वन विभाग तथा उत्तराखण्ड जल संस्थान पेयजल स्रोतों में फैली गन्दगी पर फोटो सहित एक धरातलीय रिपोर्ट तैयार कर तहसीलदार कार्यकाल में शीघ्र जमा करेंगे। यह भी तय किया गया कि तहसीलदार द्वारा इस क्षेत्र का भूगर्भीय सर्वेक्षण के लिए जिलाधिकारी को पत्र भेजा जाएगा। जिला पंचायत सदस्य जगत मर्तोलिया ने कहा कि बलाती फार्म तथा खलिया टाप क्षेत्र से भारतीय सेवा को शिफ्ट करने तथा अन्य विभागों के मानव हस्तक्षेप को कम किए जाने की मांग को लेकर बुलाई गई बैठक में कोई नतीजा नहीं निकला। कहा चुनाव बहिष्कार को सफल बनाने के लिए जो अभियान शुरू किया गया, उसकी अनुमति के लिए जिला निर्वाचन अधिकारी को पत्र भेजा गया था। उसका कोई प्रतिउत्तर नहीं मिलनें पर पुन: पत्र भेजा गया।

उन्होंने कहा कि बलाती फार्म तथा खलिया टाप क्षेत्र से भारतीय सेना को शिफ्ट करने तथा इस क्षेत्र में मानव हस्तक्षेप शून्य करने की मांग का जब तक समाधान नहीं हो जाता है तब तक किसी भी सूरत में चुनाव बहिष्कार का फैसला वापस नहीं लिया जाएगा। बैठक में जोहार क्लब के अध्यक्ष केदार सिंह मर्तोलिया ने कहा की हम भारतीय सेना का दिल से सम्मान करते है, लेकिन उन्हें वाटर पॉइंट में रहने के इजाजत नहीं दे सकते है। व्यापार संघ के अध्यक्ष प्रमोद कुमार द्विवेदी ने कहा कि यह सम्वेदनशील मुद्दा है। इस पर जिला प्रशासन को तत्काल कदम उठाना चाहिए। क्षेत्र पंचायत सदस्य ईश्वर सिंह कोरंगा ने कहा कि बलाती फार्म तथा खलिया टाप क्षेत्र में लगातार भारी भूस्खलन हो रहे है, इसलिए क्षेत्र का भूगर्भीय सर्वेक्षण भी किया जाना चाहिए। उक्रांद के नेता लोक बहादुर सिंह जंगपांगी ने कहा कि मुनस्यारी के 25 ग्राम पंचायतें इस क्षेत्र से पानी पीती है। जल का सभी स्रोत इन्हीं इलाकों में है। इसलिए इसे बर्बाद नहीं होने दिया जा सकता है। बैठक में सरमोली के ग्राम प्रधान नवीन राम, सुरिंग की ग्राम प्रधान ललिता मर्तोलिया, दरकोट की ग्राम प्रधान सावित्री पांगती, धापा की ग्राम प्रधान इन्द्रा रिलकोटिया, क्वीरीजिमिया के ग्राम प्रधान गजेन्द्र सिंह क्वीरीयाल, सेवानिवृत्त पुलिस निरीक्षक नित्यानन्द पन्त, होटल एसोसिएशन के पूरन चन्द्र पाण्डे, देवेन्द्र सिंह देवा, रघुनाथ सिंह रावत, थानाध्यक्ष ईसी मासीवाल, रेंज अधिकारी विजय भट्ट, एडीओ उद्यान हरकोटिया आदि थे।

हिमनगरी वासियों के ऐलान के बाद बलाती जिलाधिकारी रीना जोशी ने मुख्य सचिव को एक प्रस्ताव बनाकर भेजने पर सहमति व्यक्त की। खलिया टक्क्म तथा बलाती फार्म में जैव विविधता का 50 सालों के भीतर हुए नुकसान के मूल्यांकन के लिए प्रदेश के प्रमुख रिसर्चर्स सेंटरों से मूल्यांकन कराया जाएगा। दोनों क्षेत्रों में विभिन्न विभागों के द्वारा अब नये निर्माण पर मामले का समाधान होने तक रोक रहेगी।

मुनस्यारी के 25 ग्राम पंचायतों द्वारा बालती फार्म से भारतीय सेना को शिफ्ट करने सहित और बलाती फार्म तथा खलिया टाप क्षेत्र में मानव हस्तक्षेप को कम किए जाने की मांग को लेकर चुनाव बहिष्कार की घोषणा के पत्र के बाद जिला प्रशासन ने समझौता वार्ता हेतु यह बैठक बुलाई। जिलाधिकारी रीना जोशी के अध्यक्षता में हुई बैठक में सभी बिन्दुओं पर विचार कर पूरे मामले का प्रस्ताव बनाने पर बात बनी।

बनकोट से बागेश्वर में शामिल करो

गणाई गंगोली। क्षेत्रीय विकास संघर्ष समिति ने बनकोट क्षेत्र के दस गांवों को बागेश्वर जिले में शामिल करने की मांग तेज कर दी है। समिति की ओर से इसका प्रस्ताव पास कर सूचित किया गया है। क्षेत्रीय विकास संघर्ष समिति के अध्यक्ष चंचल सिंह बनकोटी की अध्यक्षता में हुई बैठक में वक्ताओं ने कहा कि इस क्षेत्र की हमेशा से उपेक्षा हुई है। क्षेत्र के विकास के लिये सड़क पर उतर कर संघर्ष करना पड़ रहा है। यह पूरा इलाका विकास के लिये तरसता रहा है। बैठक में दस गांवों को बागेश्वर जिले में शामिल करने, सप्तेश्वर पुल का निर्माण करने की मांग सम्बन्धी प्रस्ताव पास हुए। यह भी कहा कि प्रस्ताव को नहीं मानने वालों का भी बहिष्कार किया जायेगा। बैठक में क्षेत्रवासी उपस्थित थे।

आईआईएम के सहयोग से काशीपुर में बनेगा पर्यटन और शिक्षा का हब

काशीपुर। पौराणिक नगरी काशीपुर को विकसित करने के लिये केडीएफ आई आईएम के विशेषज्ञों की मदद लेगा। इसमें जानकारों की राय लेते हुए नए उद्योग स्थापित करने, पर्यटन को बढ़ावा देकर रोजगार के अवसर पैदा करने और शिक्षा का हब बनाने के लिये स्थानीय स्कूलों के प्रबन्धन को बेहतर बनाया जाएगा। इससे काशीपुर राज्य के अग्रणी शहरों में अपने आप को स्थापित कर सकेगा।

केडीएफ के अध्यक्ष राजीव घई के नेतृत्व में आईआईएम के अधिकारियों के साथ हुई बैठक में घई ने बताया कि काशीपुर को हर क्षेत्र में कैसे आगे बढ़ाना है। बैठक के दौरान मंथन में आईआईएम के निदेशक कुलभूषण बलूनी, प्रो.विवेक राय, डॉ.धीरज, स्थानीय उद्योगपति थे।

यात्री करेंगे मानसखंड कॉरिडोर के दर्शन

पिथौरागढ़। कुमाऊं मण्डल विकास निगम और उत्तराखण्ड पर्यटन बोर्ड 500 यात्रियों को मानसखण्ड कॉरिडोर के दर्शन करवाएगा। इसके लिये स्पेशल ट्रेन संचालित हो रही है। 25 अप्रैल को टनकपुर से पिथौरागढ़ पहुंचेंगे। डीएम रीना जोशी ने बताया कि दो यात्री दलों में 250-250 यात्री होंगे।

हेली से आदि कैलास यात्रा विरोध

धारचूला। व्यास घाटी से सात ग्रामों के ग्रामीणों ने हेली से आदि कैलास यात्रा का विरोध किया है। उनका कहना है कि माइग्रेशन से पहले ही बिना मन्दिर के कपाट खुले यात्रा शुरू कर दी गई है जो धार्मिक मान्यताओं के खिलाफ है। व्यास जनजाति संघर्ष समिति के बैनर तले मिलनघर में राजन नबियाल की अध्यक्षता में बैठक में कहा गया कि हेल यात्रा के दुष्परिणाम होंगे। इससे स्थानीय रोजगार भी प्रभावित होगा।

परिक्रमा

वित्तीय अनियमितता कार्रवाई के निर्देश

नैनीताल। हाईकोर्ट ने ऊधमसिंह नगर जिला पंचायत अध्यक्ष की ओर से की गई वित्तीय अनियमितता के मामले में दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए कुमाऊँ कमिश्नर को वित्तीय परामर्शदाता की रिपोर्ट के आधार पर जाँच कर चार सप्ताह में जरूरी कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं।

गाँव में लगा शराबबन्दी का बोर्ड

गैरसैंण। पज्याण गाँव में महिला मंगल दल ने पूर्ण शराबबन्दी के निर्णय के बाद गांव की प्रवेश सीमा पर चेतावनी बोर्ड लगा दिय हैं। दल की संरक्षक अंजना रावत ने बताया कि शराब से बढ़ रही बर्बादी को देखते हुए महिलाओं ने यह निर्णय लिया है कि इलाके में शराब पूरी तरह बन्दी रहेगी। इसके लिये पुलिस से भी सहयोग मांगा गया है।

१० मई को खलेंगे गंगोत्री के कपाट

उत्तरकाशी। गंगोत्री धाम के कपाट 10 मई को अक्षय तृतीया पर्व पर सर्वार्थ अमृत सिद्ध योग व अभिजीत मुहूर्त में दोपहर 12.25 बजे श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ खोले जाएंगे। मन्दिर समिति के अध्यक्ष हरीश सेमवाल ने बताया कि इस बार जांगला से गंगोत्री तक मां गंगा की रथ यात्रा निकाली जायेगी।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

चुनाव मतदान तक लुड़कना-ढुरकना जारी रहा

पि.हि.प्रतिनिधि

लोकसभा चुनाव में मतदान तक नेतागर्दी के अलावा लुढ़कना-ढुरकना जारी रहा। इस बार के चुनाव ने जनता की आँखों के सामने जितने प्रकार के कारनामे दिखाए वह सबके दिल-दीमाग पर बैठे हैं। नेताओं का फिसलना, मुकरना और अपने कारोबार की चाहत में बयानबाजी, सबकुछ खुल्लम-खुल्ला।

सरकारी भवनों पर बैठक में नोटिस

आचार संहिता की धज्जियां उड़ाती रही हैं। चुनाव आयोग ने सरकारी भवन में बैठक करने पर गंगोलीहाट विधायक फकीरराम टम्टा और भाजपा नेताओं को नोटिस दिया। पिथौरागढ़ में प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य विरेन्द्र बोहरा, भाजपा जिलाध्यक्ष गिरीश जोशी, दायित्वधारी गणेश भण्डारी, पूर्व विधायक चन्द्रा पन्त को नोटिस दिया गया।

पति-पत्नी ने बीच चुनाव पार्टी छोड़ी

रुद्रपुर। जिला पंचायत अध्यक्ष रेनू गंगवार और उनके पति सुरेश गंगवार ने चुनाव बीच कांग्रेस पार्टी छोड़ दी। एनडी तिवारी के समय से गंगवार परिवार कांग्रेस का खास रहा है। खटीमा में प्रदेश महिला कांग्रेस कमेटी की प्रदेश उपाध्यक्ष मीना सोनकर ने भी अपने पद से इस्तीफा दे डाला। इससे पहले पूर्व कबीना मंत्री दिनेश अग्रवाल भी भाजपाई बने थे।

डॉ. हरीश बिष्ट का इधर-उधर जाना

भीमताल के ब्लाक प्रमुख डॉ.बिष्ट चुनाव के समय फिर से भाजपाई बन गए। डॉ. बिष्ट पहले भी पार्टी भाजपा-कांग्रेस करते रहे हैं। क्षेत्र में खासी पैठ होने के साथ ही हमेशा महत्वाकांक्षा के लिये इधर-उधर जाने पर अब सवाल भी उठने लगे हैं। पलड़ा भारी देख उनके बदल जाने पर कार्यकर्ता भी सवाल करने लगे हैं।

पार्टी में आने वाले संस्कारवान बनेंगे

देहरादून। भाजपा के प्रदेश महामंत्री आदित्य कोठारी ने कहा कि जो भी लोग भाजपा में आए हैं, उन्हें पार्टी की रीति-नीति के दृष्टिगत संस्कारवान और क्षमतावान बनाएंगे। प्रत्येक व्यक्ति में सदगुण और दुर्गण दोनों होते हैं। हम सदगुणों को बढ़ाएंगे और दुर्गण को खत्म करेंगे। जितने भी नेता और कार्यकर्ता अभी तक भाजपा में शामिल हुए हैं उन सभी को काम में लगाया जा रहा है।

चाचा-भतीजे मिल कर ले रहे लाभ

लोहाघाट। विधायक खुशाल अधिकारी के भतीजे आनन्द अधिकारी के भाजपा में शामिल होने के बाद पूर्व विधायक व भाजपा नेता पूरन सिंह फर्त्याल ने कहा कि चाचा-भतीजा मिलकर सत्ता का लाभ ले रहे हैं। ये इनकी सांठगांठ है जो सत्ता पक्ष का संरक्षण लेना चाहते हैं। इससे भाजपा की साख गिर रही है। विधायक खुशाल सिंह ने फर्त्याल के आरोपों को खारिज कर दिया है।

लोहाघाट में भी लुढ़कते रहे

लोहाघाट। लोहाघाट में पूर्व ब्लाक प्रमुख योगेश मेहता, पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष भूपाल मेहता, यूथ कांग्रेस के जिला प्रवक्ता अमित साह, विपिन गोरखा, जमन सिंह धौनी, उमेश जोशी ने प्रदेश अध्यक्ष महेन्द्र भट्ट के सामने भाजपा की सदस्यता ले ली। कहा- पीएम सीएम के कार्यों से प्रसन्न होकर भाजपा में आ रहे हैं।

छात्र नेता भी मौका देखकर शामिल

हल्द्वानी। एमबीपीजी कालेज की पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष रश्मि लमगड़िया जो एबीवीपी से टिकट न मिलने पर निर्दलीय चुनाव जीती थी, अब चुनाव मौके पर भाजपा में शामिल हो गई। एबीवीपी से नाराज रश्मि कई बार कांग्रेस के कार्यक्रमों में भी दिखाई रही थी। उनके साथ कुछ छात्र नेता भी भाजपा सदस्यता लेने देहरादून तक गये।

निर्दलीय उमेश का हरदा के लिये दावा

हरिद्वार। निर्दलीय प्रत्याशी उमेश कुमार ने सोशल मीडिया में दावा किया कि हरीश रावत 19 अप्रैल के बाद भाजपा में शामिल होंगे और उन्हें राज्यपाल बनाया जाएगा। यह भी लिखा कि हरीश रावत 10 विधायकों को भी भाजपा में शामिल करवाएंगे। निर्दलीय के दावे से राजनीतिक गलियारों में हड़कम्प मच गया।

स्टिंगबाज सांसद का सपना देखने लगे हैं

हरिद्वार। निर्दलीय उमेश कुमार के दावे पर पलटबार करते हुए पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत ने कहा कि कैसी बिडम्बना है कि अब स्टिंगबाज भी सांसद बनने का सपना देखने लग गए हैं। कांग्रेस ने निर्दलीय प्रत्याशी को भाजपा का एजेंट करार देते हुए झूठ और साजिश की पराकाष्ठा करार दिया।

भारत विश्वगुरु बनने की राह पर

हल्द्वानी। पूर्व सीएम एवं महाराष्ट्र के पूर्व राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने दावा किया कि इस बार के चुनाव के बाद भारत विश्वगुरु बनने की राह पर है। कहा पीएम मोदी की जड़ें देश की माटी से जुड़े हैं और पंडित जवाहर लाल नेहरू की जड़ें विदेशों से जुड़े थे। भगत दा ने कहा उन्होंने राजनीति छोड़ी है राष्ट्रनीति नहीं छोड़ी।

मानसिक संतुलन खो चुके भाजपाई

देहरादून। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष करन माहरा ने मुख्यमंत्री पुष्कर धामी के कांग्रेस के घोषणा पत्र को मुस्लिम लीग का घोषणा पत्र बताये जाने की निन्दा की। कहा कि भाजपा नेता मानसिक सन्तुलन खो चुके हैं।

गवैय्या बन गये बहुत सारे

चुनाव में इस बार पहले की तरह पार्टियों के गीत नहीं सुनाई दिये जो दिनभर चलते थे। लेकिन चुनाव आयोग ने मतदाता जागरूकता के लिये गीत-संगीत को भी माध्यम बनाया और स्वीप टीम इसमें जुटी रही। इस दौर में जब हर कोई अपनी हाजिरी लगाने में पीछे नहीं है, बहत सारे गवैय्या बन गये और मतदान करने के लिये गीत कविताएं रची गई। कुमाऊँ कमिश्नर दीपक रावत ने भी 'सुन ओ आमा बूबू मतदान करी आला' गीत गाया, जिसको मीडिया ने खूब प्रचारित किया।

पूर्व राज्यमंत्री जया भी भाजपाई बनी

नैनीताल। 'इस रंग बदलती दुनिया में' गीत का स्मरण हो सकता है क्योंकि जिस हिसाब से नेता अदल-बदल होते हैं। 2007 में कांग्रेस पार्टी से विधायक का चुनाव लड़ चुकी, पूर्व राज्यमंत्री जया बिष्ट ने भी हल्द्वानी में भाजपा सम्भाग कार्यालय पहुँच कर सदस्यता ले ली। जया 1976 से कांग्रेस की सक्रिय सदस्य रही हैं और वर्तमान में प्रदेश कांग्रेस कमेटी में उपाध्यक्ष भी थीं। जया कहती हैं- कांग्रेस पार्टी की नीति जहाँ जन विरोधी होती जा रही है।

शकुन्तला दताल भी भाजपा में

जौलजीवी। क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाने वाली श्रीमती शकुन्तला दताल ने भाजपा में आकर मुख्यमंत्री पुष्कर धामी का स्वागत किया। सीएम के दौरे के समय वरिष्ठ नेता शकुन्तला ने अपने साथियों के साथ कांग्रेस को छोड़ भाजपा का झण्डा थाम लिया। इससे पहले वह कांग्रेस में बेहद सक्रिय थीं और विधायक हरीश धामी की खासी समर्थक भी रही हैं।

५०० सीटें भी आ सकती हैं : भगत

कालाढूंगी। विधायक बंशीधर भगत बहुत ही उत्साहित होकर कह रहे हैं कि वर्तमान हालातों में भाजपा 500 सीटें प्राप्त कर सकती है, इसमें आश्चर्य की बात नहीं। उन्होंने कहा कि भाजपा के पक्ष में जितनी लहर इस समय चल रही है उतनी राम मन्दिर के समय भी नहीं चली थी।

चुनाव के बाद फिर से बुल्डोजर

रामनगर। मालधन में चुनाव प्रचार के लिये पधारे सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि सरकारी जमीनों पर कब्जे के जरिये देवभूमि का स्वरूप बदलने की कोशिश कामयाब नहीं होने दी जाएगी। चुनाव के बाद फिर से बुल्डोजर चलेगा। समान नागरिक संहिता के लिये यूसीसी लेकर आए हैं।

डायनासोर की तरह विलुप्त हो रही पार्टी

लोहाघाट। भाजपा के वरिष्ठ नेता राजनाथ सिंह ने अपने प्रत्याशी के समर्थन में जनसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि भाजपा जाति पंथ व मजहब की नहीं बल्कि इन्सान और इन्सानियत की बात करती है। कहा, कांग्रेस डायनासोर की तरह तरह विलुप्त हो रही पार्टी है।

नैनीताल सीट : नेताओं पर दबाव

नैनीताल-उधमसिंह नगर लोकसभा सीट पर भाजपा के अजय भट्ट और कांग्रेस के प्रकाश जोशी की सीधी टक्कर में उन नेताओं पर दबाव रहा है जिनकी चाहत भविष्य में विधायक के लिये पार्टी टिकट की हो। इनके बोल में सुना गया कि जो मेहनत नहीं करेगा आगे भी टिकट है...

पांगू-अस्कोट-आराकोट अभियान २५ मई से ८ जुलाई

पि.हि.प्रतिनिधि

नैनीताल। इस बार अस्कोट-आराकोट अभियान 25 मई से 8 जुलाई तक चलेगा। अपने गाँव को जानो, लोगों को पहचानो, तालों-बुग्यालों के संग अपनी नदियों को समझने के अभियान को आज से 50 साल पहले 25 मई से 8 जुलाई 1974 के बीच नव स्थापित कुमाऊँ गढ़वाल विश्वविद्यालयों के छात्रों, सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा ग्रामीणों ने उत्तराखण्ड के पूर्वी कोने पर नेपाल सीमा पर स्थित अस्कोट से पश्चिमी कोने में हिमाचल से लगी सीमा पर आराकोट तक की अध्ययन यात्रा की थी। इस यात्रा के लिए सुन्दरलाल बहुगुणा ने उन्हें प्रेरित किया था। संग्रामी श्रीदेव सुमन के जन्मदिन 25 मई को यात्रा शुरु हुई। यात्रा के माध्यम से पहली बार अभियान अन्य मार्गों में गया। 1975 में श्रीनगर से शिमला, 1978 में श्रीनगर तथा तथा 1977 में नैनीताल से गोपेश्वर यात्रा की गई।

दस साल बाद पहाड़ तथा सहयोगी संस्थाओं ने तय किया कि 25 मई से 8 जुलाई 1984 के बीच एक बार फिर उन्हीं तिथियों और उसी मार्ग से यात्रा कर एक दशक में हुए परिवर्तनों को समझने की कोशिश की जाय। यात्रा को और विस्तार दिया गया। पांगू से अस्कोट, वान से रमाणी, झिन्डी, पाणा, कुंवारी पास, ढाक तपोवन-रेणी, जोशीमठ होकर गोपेश्वर, घुत्तू-बूढ़ाकेदार-उत्तरकाशी आदि नए स्थान और माई इसमें जोड़े गए। इस बार कुछ साथियों ने कोटद्वार से कर्णप्रयाग और अल्मोड़ा से श्रीनगर की भी अध्ययन यात्रा की। 1984 से 1995 के बीच उत्तराखण्ड के भीतर तथा अन्य हिमालयी राज्यों (जम्मू-कश्मीर, हिमाचल, सिक्किम, अरुणाचल) तथा देशों (नेपाल, भूटान तथा तिब्बज आदि) में यात्राएं की गई। इसी तरह 2004 में चौथा और 2024 में पांचवा अस्कोट आराकोट अभियान आयोजित हुआ।

2014 में आयोजित पांचवा अस्कोट आराकोट अभियान स्वतंत्रता सेनानी श्रीदेव सुमन के जन्मदिवस 25 मई को पांगू से चण्डी प्रसाद भट्ट द्वारा रवाना किया गया। उन्होंने इस यात्रा को 'जंगम विश्व विद्यालय' नाम दिया। अमरीका, कनाडा और जर्मनी से आए शोधार्थियों, प्राध्यापकों समेत भारत के 8 राज्यों के लगभग 200 से अधिक लोगों ने अभियान में हिस्सेदारी की थी। और अब 2024 में सम्पन्न होने वाली यात्रा इस अभियान के पचासवें साल में है।

पिछले 5 दशकों में और खासकर राज्य बनने के ढाइ दशक बाद उत्तराखण्ड का प्राकृतिक चेहरा- जल, जंगल, जमीन, खनन, बांध, सड़क आदि के बहाने कितना और घटा है? अर्थ व्यवस्था किस बिन्दु पर है? दलित और अल्पसंख्यकों की स्थिति कैसी है? पलायन का क्या रूप है? गाँव के हाल कितना बदले हैं? शिक्षा, चिकित्सा, सड़क, पानी, शराब, विभिन्न आपदाओं तथा महिलाओं-बच्चों सहित पर्वतीय जीवन के अन्य पक्षों की क्या स्थिति है, यह सब जानने-समझने के लिये 25 मई के यह यात्रा शुरू की जा रही है। अभियान की केन्द्रीय विषयवस्तु या थीम 'स्रोत से संगम' रखी गई है। ताकि नदियों से समाज के रिश्ते को गहराई और समग्र जलागम के सन्दर्भ में समझा जा सके। साल के अन्तम महीनों में टनकपुर से डाकपत्थर (तराई भाबर-दून) यात्रा को अभियान के दूसरे चरण के रूप में आयोजित करने की योजना है। इस अभियान के माध्यम से लोगों को सीखने और अपने अनुभवों तथा आज की असलियत को लोगों तक पहुंचाने की दोतरफा कोशिश होगी।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

'कालयुक्त' नाम संवत्सर २०८१ विक्रमी प्रारम्भ होने की शुभकामनाओं के साथ-

तुषार अस्पताल
चंद फार्म
(रेलवे स्टेशन के पास)
टनकपुर

SIDDHIVINAYAK SOLVENT LLP
Plot No. C-8A, Phase-III
ELDECO Sidcul Industrial Park
Sitarganj (US Nagar)

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804

YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by-
(माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

घर से बाहर घर का सा
होटल
लक्ष्य इन
मदकोट
सम्पर्क
7351285555

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

माँ नन्दा आयरन एण्ड बिल्डिंग मैटेरियल, भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी
(सीमेन्ट, सरिया, टाइल, पेण्ट, सेनेटरी, हार्डवेयर)
गोदाम- जोहार एसोसिएट्स
बच्चीनगर- 1, कमलुवागांजा, हल्द्वानी
मो.- 7409440813, 7500619761

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

पूर्ण कालिक संगीत प्रशिक्षण केन्द्र
हिमालय संगीत शोध समिति
जे.के.पुरम्, सेक्टर डी
छोटी मुखानी
हल्द्वानी
सम्पर्क- 9411563413

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादक: श्रीमती गीता उप्रेती फोन/फैक्स: (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)